بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA
Ph:+91-1872-220186, Fax:+91-1872-224186, Mob.98150-16879, E-Mail:ansarullah@qadian.in
.Mob:9682536974, Khulasa khutba of 17.10.25

तबूक नामक युद्ध के परिवेश में नबी करीम ﷺ के पवित्र जीवन परिचय का बयान।

सारांश ख़ुत्ब: जुमः

सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ि,

यू.के., स्थान मस्जिद मुबारक,बयान फर्मूदः (अख़ा, तिथि 17,1404 हश)17.10.. 2025

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مَالِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद, तअव्वुज़, तस्मियः तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- जैसा कि पिछले ख़ुत्बे में तबूक की लड़ाई के विषय में कुछ संक्षेप में वर्णन हुआ था, उसकी कुछ और जानकारी आज बयान करूंगा।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. तबूक के युद्ध का परिवेश बयान करते हुए फ़रमाते हैं कि जब रसूलुल्लाह ﷺ ने मक्का पर विजय प्राप्त कर ली तो अबू आमिर मदनी, जो खिज़रज क़बीले में से था और यहूदियों एवं ईसाइयों के साथ घनिष्ट सम्बन्धों के कारण ज़िक्र-ओ-वज़ाएफ़ (धार्मिक मन्त्रों का जाप) किया करता था और लोग उसे राहिब कहते थे, किन्तु धर्म की दृष्टि से ईसाई नहीं था। यह व्यक्ति रसूलुल्लाह ﷺ के मदीने आने के बाद मक्का भाग गया। जब मक्का पर विजय हो गई तो यह सोचने लगा कि इस्लाम के विरुद्ध षड्यंत्र पैदा करने के लिए कोई नई योजना बनानी चाहिए। अंततः इसने अपना नाम एवं वेश भूषा बदल ली और मदीने के पास क़ुबा नामक गाँव में जाकर बस गया। वर्षों तक बहार रहने के कारण मदीने के लोगों ने इसे न पहचाना। इसने मदीने के मुनाफ़िकों के साथ

करता हूँ, कुछ लोग वास्तव में उनके पास जो कुछ हो वे पेश कर देते हैं। मुख्याओं को भी एवं समृद्ध लोगों को भी हज़रत अबू बकर रज़ी, हज़रत उमर रज़ी तथा हज़रत उस्मान रज़ी. के नमूने अपने सामने रखने चाहिएं। अल्लाह तआला की कृपा से अनेक मुख्या ऐसे हैं जो उच्च कोटि के बलिदान कर रहे हैं।

इस अवसर पर दानशील सहाबियों के साथ साथ निर्धन एवं दुर्बल सहाबियों ने भी सामर्थ्यानुसार माली कुर्बानियां पेश कीं। मुनाफ़िक़ लोग इन ग़रीब सहाबियों की क़ुरबानियों का मज़ाक़ उड़ाते कि ये मुट्ठी भर अनाज पेश करके रोमियों से युद्ध करने की तय्यारी कर रहे हैं। महिलाओं ने भी इस अवसर पर अपने आभूषण पेश करके माली क़ुर्बानी में भाग लिया।

मुनाफ़िकों ने अपनी ओर से भरसक प्रयास किया और मुसलामानों को युद्ध पर जाने से रोकने की चेष्टा करते रहे। मुनाफ़िक़ कहते थे कि भीषण गर्मी है, जिस दुश्मन से युद्ध होने वाला है वह अत्यधिक शक्ति शाली है। मदीने के लोगों का व्यवसाय कृषि था और फसलें तय्यार खड़ी थीं। अतएव मुनाफ़िक़ पाखंडी लोग, लोगों को युद्ध जाने से रोकते थे परन्तु निष्ठावान सहाबियों पर इनके दुष्प्रचार का प्रभाव न होता था।

मुनाफ़िक़ लोग हुज़ूर ﷺ के सामने पेश होते और युद्ध पर न जाने के लिए बहाने पेश करते। हुज़ूर ﷺ इन सबको अनुमति दे देते, परन्तु क़ुरआन करीम ने इन सब मुनाफिकों की पोल खोल दी। क़ुरआन करीम में अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि यदि यात्रा निकट वाली होती और सरल होती तो ये अवश्य तेरे पीछे पीछे चलते, किन्तु कठिनाई सहना इनसे बड़ी दूर की बात है। ये अवश्य अल्लाह की क़समें खाएंगे कि यदि हमें तौफ़ीक़ होती तो हम अवश्य तुम्हारे साथ निकलते। ये अपनी ही जानों को हालाक कर रहे हैं और अल्लाह जानता है कि ये अवश्य झूठे लोग हैं। अल्लाह तुझे माफ़ करे, तूने इन्हें आज्ञा ही क्यूं दी। यहाँ तक कि इन लोगों का तुझे भली भाँती पता चल जाता जो सच कहते थे, और तू झूठों को भी पहचान लेता। जो लोग अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान लाते हैं वो तुझसे अपनी जानों और मालों के साथ जिहाद करने से छूट नहीं मांगते, और अल्लाह मुत्तक़ी लोगों को ख़ूब जानता है। केवल वही लोग तुझसे छूट मांगते हैं जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं रखते, और उनके दिल सन्देहों के घेरे में हैं, तथा वे अपने संदेह के कारण असमंजस में पड़े हुए हैं, और यदि उनका जिहाद पर निकलने का इरादा होता तो वे अवश्य उसकी तयारी भी करते, परन्तु अल्लाह ने पसन्द